17

भ्वादिप्रकरण में - लट् लिट् के सूत्रशेष

वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी आदि ग्रन्थों में क्रमशः एक एक धातु के रूपों को सिद्ध करने के लिए जिन सूत्रों की आवश्यकता होती है उनकी व्याख्या करके धातु के रूप सिद्ध किये जाते हैं। उनसे एक-एक धातु के रूपों का ज्ञान किया जाता है किन्तु एक लकार के सभी सूत्र बिखरे हुए होते हैं। इस प्रकार सभी का समुदित अल्पप्रयास से बोध होता है। अतः यहाँ से आगे परस्मैपदप्रकरण में लकार क्रम से सूत्र उपस्थित किये गये हैं। यहाँ कुछ अधिक प्रयुक्त होने वाले साधारण सूत्र दिये गये है। कुछ तिङन्त प्रकरण में आगे दिये गये है।

वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी इत्यादि प्रक्रिया ग्रन्थों में धातुओं का क्रम स्वीकार किया गया है। उसी प्रकार लघुसिद्धान्त कौमुदी में धातुएं चुनी है। इसी प्रकार इस प्रकरण में भी सरल प्रक्रिया के लिए चुनी हुई धातुओं को प्रदर्शित किया गया है। न कि इस धातु के सभी रूपों को। अन्य रूप विद्यार्थी स्वयं समझ सकते हैं। यदि सभी धातुओं के सभी रूप दिये जाये तो ग्रन्थविस्तार हो जायेगा।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप -

- तिङन्त प्रकरण के मुख्य सूत्रों का जानेंगे;
- विभिन्न धातुओं के रूप सिद्ध कर सकेंगे;
- विविधसूत्रों की व्याख्या करने में समर्थ होंगे;
- पूर्णपाठों में किये गये सार्वधातुक आर्धधातुक संज्ञाओं को रूपों में जानेंगे;
- भू धातु के रूपों को सिद्धकर के बहुत से लकारों में और विशेषकर लिट् लकार में प्रयुक्त सूत्रों को जानेंगे;
- इडागम प्रकरण को इस पाठ में पढ़ेंगे।

टिप्पणियाँ

लकारक्रम-लिट्

17.1 अत आदेः॥ 7.4.70

सूत्रार्थ - अभ्यास के आदि अत् को दीर्घ हो।

सूत्रव्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से दीर्घ का विधान होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। अतः (6/1), आदेः (6/1)। यहां लोपोऽभ्यासस्य सूत्र से अभ्यासस्य (6/1) पद की अनुवृत्ति होती है। दीर्घ इणः किति सूत्र से दीर्घः (1/1) पद आता है। पद योजना होती है - अभ्यासस्य आदेः अतः दीर्घः। सूत्रार्थ होता है - अभ्यास के आदि अत् को दीर्घ होता है। स्वाभाविक अभ्यास के अत् हो तो ही दीर्घ होता है। ह्रस्वः सूत्र से ह्रस्व किये गये अत् को दीर्घ नहीं किया जाता है।

उदाहरण - आत।

सूत्रार्थसमन्वय - अत सातल्यगमने धातु से परोक्षे लिट् सूत्र में लिट्, प्रथम पुरूषैकवचन की विवक्षा में तिप् प्रत्यय, उसके स्थान पर णल् तथा अनुबन्धलोप होकर अत्+अ बनता है। धातोरनभ्यासस्य सूत्र से द्वित्व होकर अत्+अत्+अ। पूर्वोऽभ्यासः सूत्र से पर्वू अत् की अभ्यास संज्ञा में हलादिः शेषः से आदि हल के अभाव में लकार का लोप अ+अत्+अ। अतो गुणे सूत्र से पररूप प्राप्त किन्तु अत आदेः सूत्र से अभ्यास के 'अ' को दीर्घ आ होकर आ+अत्+अ स्थित बनती है। तब -

17.2 अत उपधायाः॥ (7-2-116)

सूत्रार्थ - ञित् आ गित् प्रत्यय परे हो तो पर उपधा अत् के स्थान पर वृद्धि हो।

सूत्र व्याख्या - यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से वृद्धि का विधान होता है। इस सूत्र में दो पद हैं। अतः (6/1), उपधायाः (6/1)। मृजेर्वृद्धिः सूत्र से वृद्धिः (1/1) पद आता है। अचो ञिणति सूत्र से ञिणति (7/1) पद आता है। ञ् च ण् च ञ्णौ इति इतरेतरयोगद्वन्द्व समासः। ञ्णौ इतौ यस्य स ञ्िणत्, तस्मिन् ञ्िणति इति बहुव्रीहि। अंगस्य का अधिकार पढ़े जाने से प्रत्यय परे होने एवं अंग संज्ञा के उत्पन्न होने से प्रत्यये (7/1) पद का आक्षेप किया जाता है। पद योजना - उपधायाः अतः वृद्धि ञ्िणति प्रत्यये। सूत्रार्थ होता है - ञित् और णित् प्रत्यय परे होने पर उपधा का जो अत् है, उसको वृद्धि होती है। स्थानेऽन्तरतमः परिभाषा से अत् के स्थान पर आकर ही वृद्धि होगी।

उदाहरण - आत।

सूत्रार्थ समन्वय - पूर्वोक्तसूत्रों से आ+अत+अ इस स्थिति में वल् के णित् होने से उपधा के अत् को वृद्धि होकर आ+आत्+अ तथा अकः सवर्णे दीर्घः सूत्र से आ+आ को दीर्घ आ होकर आत रूप सिद्ध होता है।

17.3 द्विर्वचनेऽचि॥ (1.1.59)

सूत्रार्थ - द्वित्वनिमित्तक अच् को मान कर अच् के स्थान पर आदेश नहीं होता, द्वित्व करना हो तो।

सूत्र व्याख्या - यह निषेध सूत्र है। इस सूत्र से अच् से आदेश का निषेध किया जाता है। इस सूत्र में दो पद हैं। द्विवचने (7/1), अचि (7/1)। अचः परस्मिन् पूर्व विधौ सूत्र से अचः (6/1) पद की अनुवृत्ति होती है। स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ सूत्र से आदेशः (1/1) पर आता है। पदान्तद्विवचन ... सूत्र से न अव्ययपद की अनुवृति होती है। द्विः उच्यते अस्मिन् इति द्विर्वचनम्। यहां 'द्विर्वचने' पद की आवृत्ति होती है। एक द्विवचने पद अचि का विशेषण बनता है और उसमें निमित्त सप्तमी मानी जाती है। द्वित्व के निमित्त अच् को मान कर, ऐसा अर्थ हो जाता है। दूसरे 'द्विवचने' पद में विषय सप्तमी मान कर द्वित्व करने में, इस प्रकार अर्थ हो जाता है। अर्थ होता है - द्वित्व के निमित्त अच् को मानकर अच् के स्थान पर आदेश नहीं होता, द्वित्व के करने में। अर्थात् द्वित्व का निमित्त अच् विद्यमान हो तो उस का आश्रय करके किसी अन्य अच् के स्थान पर तब तक कोई आदेश नहीं होता, जब तक द्वित्व नहीं हो जाता। द्वित्व कर चुकने के बाद ही उस के स्थान पर कोई आदेश हो सकेगा पहले नहीं।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - क्षमार्थक क्षि धातु से परोक्ष लिट् सूत्र में लिट्, लिट् के ल् के स्थान पर प्रथमपुरूष एकवचन की विवक्षा में तिप्-एवं अनुबन्ध लोप होकर क्षि+ति। परस्मैपदानां णलतुसुस् थलथुसणल्वमाः सूत्र से तिप् को णल् सर्वादेश तथा अनुबन्ध लोप होकर क्षि+अ।

यहाँ लिटि धातोरनभ्यासस्य सूत्र से धातु को द्वित्व प्राप्त किन्तु इकोयणचि सूत्र से इक् को यण् प्राप्त। यहां भी णल् णित् होने से अचोञ्णिति सूत्र से अजन्त अंग को वृद्धि प्राप्त है। यहां फिर सार्वधातुकार्धधातुकयोः से इगन्त को गुण प्राप्त है। किन्तु विप्रतिषेधे परं कार्यम् की परिभाषा से द्वित्व होने से यण् आदेश बलवान है। अतः द्वित्व होने से पूर्व गुण प्राप्त होता है। वहां णल् को निमित्त करके द्वित्व को प्राप्त होता है उस अकार का द्वित्वनिमित्तक अच् है। द्विर्वचनेऽचि सूत्र से इस अच् परे होने से अच् को आदेश नहीं हो सकता द्वित्व कार्य के बिना अर्थात् प्रथम द्वित्व होता है, उसके बाद अच् को आदेश आदि होता है। इस प्रकार लिटि धातोरनभ्यासस्य सूत्र से अनभ्यास धातु अवयव एकाच् क्षि को द्वित्व होने पर क्षि+क्षि+अ स्थिति होती है। द्विरूक्त पूर्वभाग क्षि की पूर्वोऽभ्यासः सूत्र से अभ्यास संज्ञा में हलादिः शेषः सूत्र से अभ्यास के आदि हल् का शेष रहने पर कि+क्षि+य स्थिति बनती है-तब-

17.4 कुहोश्चुः॥ (7.4.62)

सूत्रार्थ - अभ्यास के कवर्ग और हकार के स्थान पर चवर्ग आदेश हो।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से चवर्ग का विधान किया जाता है। इस सूत्र में दो पद है। कुहोः (6/2), चुः (1/1)। यहां लोपोऽभ्यासस्य सूत्र से अभ्यासस्य (6/1) इसषाष्ठ्यन्त पद की अनुवृत्ति होती है। कुः च ह् च कुहौ, तयोः इति इतरेतरयोग द्वन्द्वसमासः। सूत्रार्थ होता है - अभ्यास के कवर्ग और हकार के स्थान पर चवर्ग आदेश होता है। कुहोः स्थानी छः है। चुः आदेश पाँच है। अतः स्थानी और आदेश की संख्या वैषभ्य होने से स्थानेऽन्तरतमः सूत्र से गुणकृत आदि आन्तर्य से निर्वाह होता है।

आन्तरतम्यपरीक्षा - (परीक्षा के लिए नहीं है।)

टिप्पणियाँ

स्थानेऽन्तरतमः परिभाषा जहां प्रवृत्त होती है वहां स्थानी से सदृशतम आदेश करना चाहिए। सादृश्य स्थान, अर्थ, गुण और प्रमाण चार प्रकार का है। सदृशतम आदेश के अन्वेषण के लिए आन्तरतम्य परीक्षा की जाती है। उस परीक्षा को यहां प्रदर्शित किया जा रहा है।

स्थानकृत् आन्तर्य है या नहीं - स्थानी कवर्ग एवं हकार का उच्चारण स्थान अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः सूत्र से कण्ठ है। आदेश में चवर्ग का उच्चारण स्थान तालु है। अतः स्थानी से सदृशतम विधीयमान आदेश में प्राप्त नहीं होता है।

प्रमाणकृत् आन्तर्य है या नहीं - प्रमाण यहां उच्चारण काल है। स्थानी कवर्ग और हकार अर्धमात्रिक के समान आदेश चवर्ग (च्, छ्, ज्, झ्, ञ्) ये पाँच ही अर्धमात्रिक है। अतः इसमें एक प्रमाणत अन्तरतम नहीं है।

अर्थकृत् आन्तर्य है या नहीं - यहां वर्णों का कोई भी अर्थ ग्रहण नहीं होता है। समुदाय ही अर्थवान् होता है। उनकी एकदेशोऽनर्थक न्याय है अतः अर्थ से आन्तर्य का विचार नहीं किया जा सकता है।

गुणकृत् आन्तर्य है या नहीं - गुण शब्द अर्थ यहां बाह्यत्न है। स्थानी कवर्ग एवं हकार से आदेश में जो बाह्य यत्न समान है वह आदेश चवर्ग सदृशतम है। बाह्यत्न नीचे विस्तार से प्रदर्शित किये जा रहे है -

	वर्ण	बाह्यत्न			
स्थानी	क	विवार	श्वास	अघोष	अल्पप्राण
	ख	विवार	श्वास	अघोष	महाप्राण
	ग	संवार	नाद	घोष	अल्पप्राण
	घ	संवार	नाद	घोष	महाप्राण
	ङ	संवार	नाद	घोष	अल्पप्राण
	ह	संवार	नाद	घोष	महाप्राण
आदेश	च	विवार	श्वास	अघोष	अल्पप्राण
	छ	विवार	श्वास	अघोष	महाप्राण
	ज	संवार	नाद	घोष	अल्पप्राण
	झ	संवार	नाद	घोष	महाप्राण
	ञ	संवार	नाद	घोष	अल्पप्राण

प्रकरण में साक्षात् स्थानी को देख कर आदेश में जिसका बाह्यप्रयत्न स्थानी से सदृशतम हो वह आदेश होता है।

जैसे- स्थानी ककार हो तो आदेश में चकार का ही बाह्यप्रयत्न ककार के तुल्य है। स्थानी खकार हो तो आदेश में छकार का ही बाह्यप्रयत्न खकार के तुल्य है। स्थानी गकार हो तो आदेश में जकार का ही बाह्यप्रयत्न गकार के तुल्य है। स्थानी घकार हो तो आदेश में झकार का ही बाह्यप्रयत्न घकार के तुल्य है। स्थानी ङकार हो तो आदेश में ञकार का ही बाह्यप्रयत्न ङकार के तुल्य है। स्थानी हकार हो तो आदेश में झकार का ही बाह्यप्रयत्न हकार के तुल्य है। यद्यपि ङकार के तुल्य जकार भी है फिर भी ङकार एवं ञकार दोनों अनुनासिक भी है। अतः ङकार क स्थान पर ञकार ही होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - पूर्व में कि+क्षि+अ स्थिति थी।

यहाँ कुहोश्चुः सूत्र से अभ्यास के कवर्ग के ककार के स्थान पर चवर्ग करना है। ककार के स्थान पर आदेश में चवर्ग में से कौनसा हो इसलिए उपर आन्तरम्भ्य परीक्षा प्रदर्शित कि गई उसके आधार पर ककार का बाह्य प्रयत्न विवार श्वास अघोष एवं अल्पप्राण है। आदेश में चकार का बाह्य प्रयत्न विवार श्वास अघोष और अल्पप्राण ककार के तुल्य है। अतः चकार आदेश होकर चि+क्षि+अ स्थिति बनती है।

17.5 अचो ञ्णिति॥ (7.1.91)

सूत्रार्थ - ञित् णित् प्रत्यय परे हो तो अजन्त अंग को वृद्धि हो।

सूत्र व्याख्या - यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से वृद्धि का विधान किया जाता है। इस सूत्र में दो पद है। अचः (6/1), ञ्णिति (7/1)। अंगस्य (6/1) इसका अधिकार है। मृजेर्वृद्धिः सूत्र से वृद्धिः (1/1) पद की अनुवृत्ति होती है। ञ् च ण् च ञणौ इति इतरेतरयोग द्वन्द्वसमास्। ञ्णौ इतौ यस्य स ञ्णित् तस्मिन् ञ्णिति इति बहुव्रीहिसमासः। प्रत्यय परे होने से अंग संज्ञा उत्पन्न होती है। अतः प्रत्यये इस सप्तम्यन्त पद की अपेक्षा होती है। पदयोजना होती है - अचः अंगस्य ञ्णिति प्रत्यये वृद्धिः। अचः अंगस्य में समान विभक्ति होने से अच् का विशेषण होने से तदन्त विधि होती है। तदन्तविधि से अजन्तस्य अंगस्य यह प्राप्त होता है। अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से अन्त्य अल् को वृद्धि होती है। यहां अन्त्य अत् अच् ही है। अतः सूत्रार्थ होता है - अजन्त अंग के अन्त्य अच् को वृद्धि होती है। यदि ञित् या णित् प्रत्यय परे हो।

उदाहरण -चिक्षाय

सूत्रार्थ समन्वय - पूर्व में चि+क्षि+अ यह स्थिति थी। णल् प्रत्यय परे होने से चि क्षि इस समुदाय की अंग संज्ञा होती है। यहां अंग अजन्त है और णल् णित् प्रत्यय है। अतः अलोऽन्त्यस्य की परिभाषा से अचोञ्णिति सूत्र से अन्त्य अल् इकार के स्थान पर वृद्धि ऐकार होकर चि क्षै+अ स्थिति बनती है। उसके बाद एचोऽयवायावः से ऐकार को आय् आदेश होकर चिक्षाय रूप सिद्ध होता है।

टिप्पणियाँ

चिक्षियतुः - क्षय अर्थक क्षि धातु से परोक्षे लिट् सूत्र से लिट्, लिट् के ल् के स्थान पर प्रथमपुरूष द्विवचन की विवक्षा में तस् प्रत्यय होकर क्षि+तस्। तस् को अतुस् सर्वादेश होकर क्षि+अतुस् बनता है। उसके बाद सार्वधातुकार्धधातुकयोः से इगन्त को गुण प्राप्त होता है- तब

17.6 असंयोगाल्लिट् कित्॥ (1.2.5)

सूत्रार्थ -असंयोग से परे अपित् लिट् कित् हो।

सूत्र व्याख्या -यह अतिदेश सूत्र है। इस सूत्र से कित् का अतिदेश किया जाता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। असयोगात् (5/1) लिट् (1/1), कित् (1/1)। सार्वधातुकमपित् सूत्र से अपित् (1/1) पद आता है। न संयोगः असंयोगः, तस्मात् असंयोगत् इति नञ् अपित् इति नञ् तत्पुरूष समासः। सूत्रार्थ होता है - असंयोग से परे अपित् लिट् कित् होता है। अठारह तिङ्प्रत्ययों में तिप्, सिप्, मिप् ये तीन पित् है। शेष 15 प्रत्यय अपित् है। इसी प्रकार तिप् आदि के स्थान पर विहित् णालादि भी स्वयं अपित् ही है। यहां तिप् सिप् व मिप् के स्थान पर विहित णल्, थल् एवं अ ये तीन पित् है और इन से भिन्न अपितों की कित् संज्ञा होती है।

उदाहरण -चिक्षियतुः।

सूत्रार्थ समन्वय - पूर्व में क्षि+अतुस् स्थिति में इगन्त अंग इक् के इकार को गुण प्राप्त था। यहां लिट् के स्थान पर विहत जो तस् प्रत्यय के स्थान पर अतुस् स्थानीवद्भाव न होने से स्वतः पित् नहीं है। अतः अपित् और लिट् है। क्षि के अन्त में इकार है संयोग नहीं। अतः असंयोग से परे अपित् लिट् अतुस् है। अतः इस सूत्र असंयोगल्लिट् कित् से कित् अतिदेश किया जाता है। और क्ङिति च से इग्लक्षण गुण का निषेध होता है। इसके बाद लिटि धातोरनभ्यासस्य सूत्र में अनभ्यास धातु के अवयव एकाच् क्षि को द्वित्व होकर क्षि+क्षि+अतुस् हलादिःशेषः सूत्र में अभ्यास के आदि हल् शेष रहकर कि+क्षि+अतुस्। कुहोश्चुः से अभ्यास के ककार को चकार होकर चि+क्षि+अतुस्। उसके बाद श्नुधातुभ्रुवां वोरियङुवङौ सूत्र से षकारोत्तरवर्त्ती इकार के स्थान पर इयङ् आदेश, अनुबन्ध लोप होकर चि+क्षिय्+अतुस्। तथा सकार को सत्व एवं विसर्ग होकर चिक्षियतुः रूप सिद्ध होता है।

चिक्षियुः - क्षि धातु से लिट् में प्रथम पुरूष बहुवचन की विवक्षा में झि प्रत्यय, उसके स्थान पर झेर्जुस् से जुस् एवं अनुबन्ध होकर क्षि+उस्। सार्वधातुकार्धधातुकयोः से गुण प्राप्त असंयागाल्लिट् कित् से उस् की कित् संज्ञा क्ङिति च से गुण निषेध, द्वित्व और अभ्यास कार्य होकर चि+क्षि+उस्। अचि श्नुधातुभ्रुवां "वोरियङुवङौ सूत्र से क्षि के इ को इयङ् होकर चि+क्षिय्+उस्, वर्णसम्मेलन तथा स् को विसर्ग होकर चिक्षियुः रूप सिद्ध होता है।

चिक्षयिथ, चिक्षेय - क्षि धातु से लिट, लिट् को सिप्, सिप् को थल् सर्वादेश होकर क्षि+थ। लिट् च सूत्र में लिट् आदेश के सिप् की आर्धधातुक संज्ञा, उसके स्थान पर आदेश हुए थल् भी आर्धधातुक हुआ तथा वलादि भी है। अतः आर्धधातुकस्येड् वलादेः से थल् को इट् का आगम प्राप्त। किन्तु -

पाठगत प्रश्न 17.1

1. अभ्यास के आदि अच् को दीर्घ किस सूत्र से होता है?
2. अतति में अत् धातु का अर्थ क्या है?
3. ञित् णित् प्रत्यय परे रहते उपधा के अत् को वृद्धि किस सूत्र से होती है?
4. द्विर्वचनेऽचि का अर्थ लिखिए?
5. चिक्षाय में ककार को चकार किस सूत्र से होता है?
6. चिक्षाय में इकार को वृद्धि किस सूत्र से होती है?
7. चिक्षियतुः में आर्धधातुक निबन्धक गुण का अभाव कैसे हुआ।
8. चिक्षियतुः में यकार किस से आया?
9. चिक्षाय रूप में ककार का चकार करने में कैसी समानता है-

   1. स्थानकृत 2. गुणकृत् 3. अर्थकृत् 4. प्रमणकृत्

17.7 एकाच उपदेशेऽनुदात्तात्॥ (7.2.10)

सूत्रार्थ - उपदेश अवस्था में जो धातु एकाच् वाली तथा साथ ही अनुदात्त भी हो तो उस धातु से परे आर्धधातुक प्रत्यय को इट् का आगम नहीं होता।

सूत्र व्याख्या - यह निषेध सूत्र है। इस सूत्र से इट् का निषेध किया जाता है। इस सूत्र में तीन पद हैं। एकाचः (5/1) उपदेश (7/1), अनुदात्तात् (5/1)। ऋत इद्धातोः इस सूत्र से धातोः (5/1) पद की अनुवृत्ति होती है। नेड् वशि कृति इस सूत्र से न अव्ययपद एवं इट् (1/1) पद की अनुवृत्ति होती है। एकः अच् यस्य यस्मिन् वा असौ एकाच्, तस्माद् एकाचः इति बहुव्रीहिसमासः। अनुदात्तः अस्ति अस्य इति अनुदात्तः धातुः (अर्श आदिभ्योऽच् इति अजन्तम् पदम्) सूत्रार्थ होता है- उपदेश में जो धातु एकाच् और अनुदात्त है उससे परे आर्धधातुक को इट् नहीं होता है। जो धातु उपदेश अवस्था में एकाच् भी है और अनुदात्त भी है। उससे परे आर्धधातुक को इट् का निषेध किया गया है। यहां विशेष्य अवधेय है। यदि उपदेश में धातु एकाच् है परन्तु अनुदात्त नहीं है तो निषेध नहीं होगा। यदि धातु उपदेश में अनुदात्त है परन्तु एकाच् नहीं है तो भी निषेध नहीं होता है। जिस धातु को इट् का आगम होता है उसे सेट् धातु कहते हैं। जिस धातु के परे आर्धधातुक को इट् का आगम नहीं होता उसे अनिट् कहते हैं। और जिस धातु से परे आर्धधातुक को इट् का आगम विकल्प से होता है वह वेट् होती है। इस प्रकार इट् आगम के आधार पर धातु तीन प्रकार की है - सेट्, वेट् और अनिट्।

टिप्पणियाँ

आर्धधातुकस्येड् वलादेः सूत्र से इट् का आगम का विधान किया जाता है। इस सूत्र से इट् का निषेध किया गया है। अतः इस सूत्र में कहा गया कि आर्धधातुक को इट् नहीं होता है।

उपदेश धातु में बहुत अधिक स्वर की योजना होती है। उसकी उपदेशेऽजनुनासिक इत् सूत्र से इत् संज्ञा होती है। जिस धातु का अनुदात्त स्वर इत् संज्ञा प्राप्त होती है वह धातु अनुदात्तेत् कही जाती है। जिस धातु के स्वकीय स्वर की इत्संज्ञा नहीं होती है वह धातु अनुदात्त कही जाती है। इस प्रकार अनुदात्त एवं अनुदात्तेत् दो प्रकार धातु होती हैं।

पाणिनीयधातुपाठ में पाणिनी ने धातु स्वरों का निर्देश किया गया है। वहां देखने से ही उसका ज्ञान हो सकता है। वहाँ परिशीलन से कुछ धातुओं का निर्देश करने के लिए समर्थ हो सके। अतः कौन सी धातु अनुदात्त है और कौन अनुदात्त नहीं इस ज्ञान के लिए धातुएँ व्यवस्थित है। वे यहां दी गई है।

जिस धातु को एक अच् होता है वह अजन्त और हलन्त भेद से दो प्रकार की होती है। यहां अजन्त धातु विषयी कारिका प्रस्तुत है। इस कारिका में स्थिति धातु अनुदात्त नहीं हैं।

ऊदृदन्तैर्यौतिरुक्ष्णुशीङ्स्नुनुक्षुश्विडीङ्श्रिभिः।
वृङ्वृञ्भ्यां च विनैकाचोऽजन्तेषु निहताः स्मृताः॥

इस कारिका में अविद्यमान या अनुल्लिखत एकाच् और अजन्त धातु अनुदात्त होती है। कारिका में उल्लिखित-ऊदन्त, ॠदन्त (दीर्घ ;), यु रु क्ष्णु शी स्नु क्षु श्वि डीङ् श्रि, वृङ्, वञ् धातुएं हैं। इनको छोड़कर अन्य एकाच् और अजन्त धातु अनुदात्त होता है।

हलन्त 103 धातुएं हैं -

कान्तेषु शक्लेकः।

चान्तेषु पच् मुच् रिच् वच् विच् सिचःषट्। छान्तेषु प्रच्छ्येकः। जान्तेषु त्यज् निजिर् भज् भञ्ज् भुज् भ्रस्ज् मस्ज् यज् युज् रुज् रञ्ज् विजिर् स्वञ्ज् सञ्ज् सृजः पन्द्रह।

दान्तेषु अद् क्षुद् खिद् छिद् तुद् नुद् पद्य भिद् विद्य विनद् विन्द् शद् सद् स्विद्य स्कन्द् हदः सोलह।

धान्तेषु क्रुध् क्षुध् बुध्य बन्ध् युध् रुध् राध् व्यध् साध् शुध् सिध्या ग्यारह।

मान्तेषु मन्यहनी दो।

पान्तेषु आप् क्षुप् क्षिप् तप् तिप् तृप्य दृप्य लिप् लुप् वप् शप् स्वप् सृपस् तेरह।

भान्तेषु यभ् रभ् लभः तीन।

मान्तेषु गम् नम् यम् रमश् चार।

शान्तेषु क्रुश् दंश् दिश् मृश् रिश् रुश् लिश् विश् स्पृशो दस।

भ्वादिप्रकरण में - लट् लिट् के सूत्रशेष

षान्तेषु कृष् त्विष् तुष् द्विष् दुष् पुष्य पिष् विष् शिष् शुष् श्लिष ग्यारह।

सान्तेषु घस्-वसती दो।

हान्तेषु दह् दिह् दुह् नह् मिह् रुह् लिह् वहः आठ।

अनुदात्ता हलन्तेषु धातवः एक सौ तीन। 103 धातु अनुदात्त है।

ये हलन्त अनुदात्त धातुएं अकारादिक्र से नीचे प्रस्तुत हैं -

क्र.	धातुः	--	क्र.	धातुः	--	क्र.	धातुः	--	क्र.	धातुः	--	क्र.	धातुः
1.	अद्		22.	दह्		43.	भिद्		64.	रिश्		85.	शप्
2.	आप्		23.	दिश्		44.	भुज्		65.	रुज्		86.	शिष्
3.	कृष्		24.	दिह्		45.	भ्रस्ज्		66.	रुध्		87.	शुध्
4.	क्रुध्		25.	दुष्		46.	मन्य		67.	रुश्		88.	शुष्
5.	क्रुश्		26.	दुह्		47.	मस्ज्		68.	रुह्		89.	श्लिष्य
6.	क्षिप्		27.	दृप्य		48.	मिह्		69.	लभ्		90.	सत्रा्
7.	क्षुद्		28.	दश्श्		49.	मुच्		70.	लिप्		91.	सद्
8.	क्षुध्		29.	द्विष्		50.	मृश्		71.	लिश्		92.	साध्
9.	खिद्		30.	नम्		51.	यज्		72.	लिह्		93.	सिच्
10.	गम्		31.	नह्		52.	यभ्		73.	लुप्		94.	सिध्य
11.	घस्		32.	निजिर्		53.	यम्		74.	वच्		95.	सृज्
12.	छिद्		33.	नुद्		54.	युज्		75.	वप्		96.	सृप्
13.	छुप्		34.	पच्		55.	युध्		76.	वस्		97.	स्कन्द्
14.	तप्		35.	पद्य		56.	रत्रा्		77.	वह्		98.	स्पश्श्
15.	तिप्		36.	पिष्		57.	रभ्		78.	विच्		99.	स्वत्रा्
16.	तुद्		37.	पुष्य		58.	रम्		79.	विजिर्		100.	स्वप्
17.	तुष्		38.	प्रच्छ्		59.	राध्		80.	विद्य		101.	स्विद्य
18.	त्प्		39.	बन्ध्		60.	रिच्		81.	विष्		102.	हद्
19.	त्यज्		40.	बुध्य		61.	विनद्		82.	व्यध्		103.	हन्
20.	त्विष्		41.	भज्		62.	विन्द्		83.	शकद्ध			
21.	दश्		42.	भत्रा्		63.	विश्		84.	शद्			

टिप्पणियाँ

भ्वादिप्रकरण में - लट् लिट् के सूत्रशेष

हलन्त धातुओं में कुछ धातुओं के विषय में विवरण यहां दिया गया है।

अनुक्र.	धातुः-अर्थः	गणः, पदम्
1.	शकॢँ शक्तौ	स्वादि, प.प.
2.	पच् डुपचँष् पाके	भ्वादि, उ.प.
3.	मुच् मुचँॢ मोक्षणे	तुदा, उ.प.
4.	रिच् रिचिर् विरेचने, रिचिर् वियोजनसम्पर्चनयोः	रूधा, उ.प.चुरा, उ.प.
5.	वच् वच परिभाषणे, ब्रवो वचिः इति वच् अपि	अदा, प.प.
6.	विच् विचिर् पश्थग्भावे	रूधा, उ.प.
7.	सिच् षिचँ क्षरण	तुदा, उ.प.
8.	प्रच्छ ज्ञीप्सायाम्	तुदा, प.प.
9.	त्यज हानौ	भ्वा, प.प.
10.	निजिर् णिजिर् शौचपोषण्योः	जुहो., उ.प.
11.	भज् सेवायाम्	भ्व, उ.प.
12.	भञ्ज् भत्राँ आमर्दने	रूधा, प.प.
13.	भुज् भुज पालनाभ्यवहारयोः, भुजाँ कौटिल्ये	रूधा, प.प. तुदा, प.प.
14.	भ्रस्ज् पाके	तुदा, प.प.
15.	मस्ज् टुमस्जाँ शुद्धौ	तुदा, प.प.
16.	यज् देवपूजासक्तिकरणदानेषु	भ्वा, उ.प.
17.	युज् युजिर् योगे,युजँ समाधौ,युजसंयमने	रूधा, उ.प.दिवा, आ.प.चुरा, उ.प.
18.	रूज् रूजाँ भक्े	तुदा, प.प.
19.	रञ्ज् रागे	भ्वा, दिवा, उ.प.
20.	विजिर् पृथग्भावे	जुहो, उ.प.

21.	स्वञ्ज्षवत्राँ परिष्वके	भ्वा, आ.प.
22.	सञ्ज्षात्रा सके	भ्वा, प.प.
23.	सृज विसर्गे	दिवा, आ.प.। तुदा, प.प.
24.	अद भक्षणे	अदा, प.प.
25.	क्षुद् क्षुदिर् सम्पेषणे	रूधा, उ.प.
26.	खिद् खिदँ दैन्ये, खिद परिघाते	दिव, रूधा, आ.प.तुदा, प.प.
27.	छिद् छिदिर् द्वैधीकरणे	रूधा, उ.प.
28.	तुद् व्यथने	तुदा, उ.प.
29.	नुद णुद प्रेरणे	तुदा, उ.प.
30.	पद् पदँगतौ	दिवा, आ.प.
31.	भिद् भिदिर् विदारणे	रूधा, उ.प.
32.	विद्-विद्-विदँ सत्तायाम्	दिवा, आ.प.
33.	विन्द्-विद् विदऊ विचारणे	रूधा, आ.प.
34.	विन्द्-विद् विदद्यँ लाभे	तुदा, उ.प.
35.	शद् शदद्यँ शातने	भ्वा, तुदा, प.प.
36.	सद्षादद्यँ विशरणगत्यवसादनेषु	भ्व, तुदा, प.प.
37.	स्विद्य स्विद् ञिष्विदाँ गात्रप्रक्षरणे	दिवा, प.प.
38.	स्कन्द् स्कन्दिर् गतिशोषणयोः	भ्वा, प.प.
39.	हद् पुरीषोत्सर्गे	भ्वा, आ.प.
40.	क्रुध क्रोधे	दिवा, प.प.
41.	क्षुध् बुभुक्षायाम्	दिवा, प.प.
42.	बुध् बुध् बुधँ अवगमने	दिव, आ.प.
43.	बन्ध बन्धने	क्र्यादि, प.प.
44.	युध् सम्प्रहारे	दिवा, आ.प.

टिप्पणियाँ

45.	रूध् रूधिरँ आवरणे, अनु+रूधँ कामे	रूधा, आ.प.दिवा, आ.प.
46.	राध् राध संसिद्धौराध वृद्धौ	स्वा, प.पदिवा, प.प.
47.	व्यध ताडने	दिवा, प.प.
48.	शुध् शौचे	दिवा, प.प.
49.	साध् संसिद्धौ	स्वा, प.प.
50.	सिध्य् सिध् षिधुँ संराद्धौ	दिवा, प.प.
51.	मन्य-मन् मनँ ज्ञाने	दिवा, आ.प.
52.	हन् हिंसागत्योः	अदा, प.प.
53.	आप् आपद्म व्याप्तौआपद्म लम्भने	स्वा, प.प.चुरा, उ.प.
54.	क्षुप् प्रेरणे	दिवा, प.प.। तुदा, उ.प.
55.	क्षिप् स्पर्शे	तुदा, प.प.
56.	तप्-तप सन्तापे, तपँ ऐश्वर्ये, तप दाहे	भ्वा, प.प.दिवा, आ.प.चुरा, उ.प.
57.	तिप् तिपश्ँ क्षरणे	भ्वादि, प.प.
58.	तृप्य, तृप् त्प प्रीणने	दिवा, प.प.
59.	दृप्य दृप् दश्प हर्षमोहनयोः	दिवा, प.प.
60.	लिप् उपदेहे	तुदा, उ.प.
61.	लुप्-लुपद्यँ छेदने	तुदा, उ.प.
62.	वप् डुवपँ बीजसन्ताने	भ्वादि, उ.प.
63.	शप् शपँ आक्रोशे	भ्वादि, दिवा, उ.प.
64.	स्वप् ञिष्वप् शये	अदा, प.प.
65.	सृप् सृपद्यँ गतौ	भ्वादि, प.प.
66.	यभ् मैथुने	भ्वादि, प.प.
67.	रभ् राभस्ये	भ्वादि, आ.प.
68.	लभ् डुलषँष् प्राप्तौ	भ्वादि, आ.प.

69.	गम् गमद्यँ गतौ	भ्वादि, प.प.
70.	नम् णम प्रह्त्वे शब्दे च	भ्वादि, प.प.
71.	यम् यमुँ उपरमे	भ्वादि, प.प.
72.	रम् रमुँ क्रीडायाम्	भ्वादि, आ.प.
73.	क्रुश् आहने रोदने च	भ्वादि, प.प.
74.	दंश् दशने	भ्वादि, प.प.
75.	दिश् अतिसर्जने	तुदा, प.प.
76.	दृश् दशशिर् प्रेक्षणे	भ्वादि, प.प.
77.	मृश् आमर्शने	तुदा, प.प.
78.	रिश् हिंसायाम्	तुदा, प.प.
79.	रूश् हिंसायाम्	तुदा, प.प.
80.	लिश् अल्पीभावे, लिश गतौ	दिवा, आ.प.तुदा, प.प.
81.	विश् प्रवेशन	तुदा, प.प.
82.	स्पृश् संस्पर्शे	तुदा, प.प.
83.	कृष विलेखने	भ्वादि, तुदा, उ.प.
84.	त्विष् दीप्तौ	भ्वादि, उ.प.
85.	तुष् प्रीतौ	दिवा, प.प.
86.	द्विष् अप्रीतौ	अदा, उ.प.
87.	दुष् वैकृत्ये	दिवा, प.प.
88.	पुष्य-पुष् पुष पुष्टौ	दिवा, प.प.
89.	पिष्, पिषद्यँ सत्वूर्णने	रूधा, प.प.
90.	विष् विषद्यँ व्याप्तौ,	जुहो, उ.प.
	विषुँ सेचने,	भ्वादि, प.प.
	विष विप्रयोगे	क्र्यादि, प.प.

91.	शिष् शिष हिंसायाम्,	भ्वादि, प.प.
	शिषद्मँ विशेषणे,	रूधा, प.प.
	शिष असर्वोपयोगे	चुरा, उ.प.
92.	शुष शोषणे	दिवा, प.प.
93.	श्लिष्य श्लिष् श्लिष आलिक्ने	दिवा, प.प.
94.	घस् घसद्मँ अदने	भ्वादि, प.प.
95.	वसति वस् निवासे	भ्वादि, प.प.
96.	दह् भस्मीकरणे	भ्वादि, प.प.
97.	दिह् उपचये	अदा, उ.प.
98.	दुह् प्रपूरणे	अदा, उ.प.
99.	नह् णहँ बन्धने	दिवा, उ.प.
100.	मिह् सेचने	भ्वादि, प.प.
101.	रूह् बीजजन्मनि प्रादुर्भावे च	भ्वादि, प.प.
102.	लिह् आस्वादने	अदा, उ.प.
103.	वह् प्रापणे	भ्वादि, उ.प.

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय – पूर्व क्षि+य स्थिति में आर्धधातुकस्येड, वलादे: सूत्र. से इट् का आगम प्राप्त। किन्तु क्षि धातु उपदेश में एकाच् और अनुदात्त है। अत: इट् आगम का एकाच् और अनुदात्त होने से इस एकाच् उपदेशेऽनुदात्तात् सूत्र से इट् का निषेध है।

17.8 कृसृभृवृस्तुद्रुस्रुश्रुवो लिटि॥ (7.2.13)

सूत्रार्थ –कृ सृ भृ वृ स्तु द्रु स्रु श्रु इन आठ धातुओं से परे ही लिट् को इट् न हो, अन्य अनिट् धातुओं से परे भी उसे इट् का आगम जा जाये।

सूत्रव्याख्या – यह नियम सूत्र है। इस सूत्र में दो पद हैं। कृसृभृवृस्तुद्रुस्रु श्रुव: (5/1) लिटि (7/1)। नेड्वशि कृति सूत्र से न अव्ययपद की अनुवृत्ति है। यहां आर्धधातुक लिट को इट् आगम होता है। लिटि इसका लिट: इसषाष्ठ्यन्त से विपरिणाम होता है। सूत्रार्थ होता है –कृ सृ भृ वृ स्तु द्रु स्रु श्रु इन से लिट् को इट् नहीं होती है।

इस सूत्र में अनुबन्धरहित कृ डुकृञ् करणे, कृञ् हिंसायाम् इन दो का ग्रहण होता है। सृ से सृ गतौ, भृ निरनुबन्धपाठ होने से भृञ् भरणे, डुभृञ् धारणेपोषणयोः इन दो का ग्रहण होता है, निरनुबन्धितपाठ से वृङ् सम्पक्तौ, वृञ् वरणे इन दो का ग्रहण होता है, स्तु सेषटुञ् स्तुतौ, द्रुगतौ, स्रु गतौ, तथा श्रु श्रवणे का ग्रहण किया जाता है।

कृ सृ भृ ये तीन एकाच् और अनुदात्त धातुएं है। अतः इनसे एकाच् उपदेशेऽनुदात्तात् सूत्र से इट् आगम नहीं होता। वृ धातु को श्रयुकः क्किति (श्रिञ् एकाच् उगन्त गित् कित् प्रत्यय को इट् नहीं) उगन्त तथा थल् कित् होने से इट् नहीं प्राप्त होता। इस प्रकार इन चार धातुओं को इस सूत्र के बिना भी इट् नहीं होता। इन चारों से इट् आगम का निषेध होता है। अतः पुनः निषेध करने के लिए सूत्र से नियम की कल्पना की जाती है। सिद्ध होने पर भी कोई बात दोहराई जाय तो वह नियमार्थ बन जाती है। स्तु द्रु, स्रु श्रु आदि से थल से भारद्वाज नियम से पाक्षिक इट् का आगम प्राप्त होता है। परन्तु उनसे इट् नहीं होंवे इसलिए सूत्र में उपादान किया गया है। इस प्रकार पर्यावलोचना से सूत्र का अर्थ होता है -कृ सृ भृ वृ स्तु द्रु स्रु श्रु इसमें ही लिट् को इट् नहीं होता। अन्य धातुओं से लिट् को इट् होता है। अतः अन्य एकाच् उपदेशेऽनुदात्त होने से इट् आगम निषेध प्राप्त था किन्तु इस सूत्र से उनको पुनः इट् आगम होता है। इस प्रकार इस सूत्र से दिया गया नियम को क्रादिनियम कहा जाता है।

आर्धधातुकस्येऽवलादेः सूत्र से अविशेष के समान इन वलादि आर्धधातुक को इट् का विधान किया जाता है। एकाच् उपदेश में अनुदात्त होने से इस सूत्र द्वारा उपदेश में एकाच् अनुदात्त से परे अविशेष से पर को इट् निषेध किया जाता है। यहां जिनसे निषेध किया गया उनमें क्रादि को छोड़कर अन्यों को पुनः क्रादिनियम से इट् का आगम होता है। और भी कृ सृ भृ वृ स्तु द्रु स्रु श्रुवा लिटि सूत्र से क्रादि आठ को लिट् में इट् निषेध किया गया। अन्य अनिट् को इट् का विधान होता है। अनिटों को पुनः सेट्त्व केवल लिट् में ही होता है।

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय- पूर्व क्षि+थ स्थिति में आर्धधातुकस्येड् वलादेः से थल् को इट् आगम प्राप्त। प्राप्त इट् आगम को एकाच् उपदेशेऽनुदात्तात् से निषेध। इस प्रकार क्षि धातु क्रादि में नहीं है। अतः क्रादिनियम से क्षि धातु के लिट् थल् को पुनः इट् आगम प्राप्त होता है। तब-

17.9 अचस्तास्वत् थल्यनिटो नित्यम्॥ (7.2.61)

सूत्रार्थ - उपदेश में अजन्त धातु, जो तास् में नित्य अनिट् हो, उससे परे थल् को इट् का आगम नहीं होता।

सूत्र व्याख्या -यह निषेध सूत्र है। इस सूत्र द्वारा इट् का निषेध किया जाता है। इस सूत्र में पाँच पद हैं। अचः (5/1), तास्वत् अव्ययपद, थलि (7/1), अनिटः (5/1), नित्यम् क्रियाविशेषण अव्ययपद। उपदेशेऽत्वतः सूत्र से उपदेशे (7/1) पद की अनुवृत्ति है। तासि च क्लृपः सूत्र से तासि (7/1) पद की अनुवृत्ति है। न वृद्भ्यश्चतुर्भ्यः सूत्र से न अव्ययपद की अनुवृत्ति है। धातु से थल्

टिप्पणियाँ

का विधान है। अतः धातोः (5/1) का आक्षेप किया जाता है। तासौ इव तास्वत् इति सप्तमन्त से वति प्रत्यय। पद योजना-उपदेशे अचः धातोः तासि नित्यम् अनिटः तास्वत् थलि इट् न। अचः धातोः से अच् धातु का विशेषण है। अतः तदन्त विधि से अजन्ताद् धातोः अर्थ प्राप्त होता है। सूत्रार्थ होता है - उपदेश में ऐसी अजन्त धातु जो तास् में नित्य अनिट् हो उस से परे जैसे तास् में इट् नहीं होता वैसे थल् में भी इट् नहीं होता।

उदाहरण में सूत्रार्थ समन्वय - पूर्व में क्रादिनियम से क्षि धातु से लिट् के थल् को पुनः इट् आगम प्राप्त हुआ। क्षि धातु उपदेश में अजन्त है। एकाच् उपदेशेऽनुदात्तात् सूत्र से उससे परे तास् को नित्य इट् आगम नहीं होता है अतः वह तास् परे होने से नित्य अनिट् है। अच् से तास् वत् थल् नित्य अनिट् है। इस सूत्र से क्षि धातु से परे थल् को इट् आगम का निषेध प्राप्त होता है।

17.10 उपदेशेऽत्वतः॥ (7.2.62)

सूत्रार्थ - उपदेश में ह्रस्व अकार वाली धातु जो तास् में नित्य अनिट् हो उससे परे थल् को इट् न हो।

सूत्र व्याख्या - यह निषेध सूत्र है। इस सूत्र द्वारा इट् का निषेध किया जाता है। इस सूत्र में दो पद है। उपदेशे (7/1), अत्वतः (5/1)। अचस्तास्वत् थल्यनिटो नित्यम् सूत्र से तास्वत् अव्ययपद, थलि (7/1), अनिट् (5/1), नित्यम् क्रियाविशेषण अव्ययपद। तासि च क्लृपः सूत्र स तासि (7/1) पद की अनुवृत्ति है। गमेरिट् परस्मैपदेषु सूत्र से इट् (1/1) पद की अनुवृत्ति है। न वृद्भ्यचतुर्भ्यः सूत्र से न अव्ययपद की अनुवृत्ति है। धातु से थल् का विधान है। अतः धातोः (5/1) का आक्षेप किया जाता है।

अत्-अस्ति-अस्मिन्निति अत्वान्, तस्य अत्वतः। पदयोजना-उपदेश अत्वतः धातोः तासि नित्यम् अनिटः तास्वत् थलि इट् न। सूत्रार्थ होता है - उपदेश में ह्रस्व अकार वाली धातु जो तास् में नित्य अनिट् हो उससे परे जैसे थास् में इट् नहीं वैसे थल् में भी इट् न हो।

उदाहरण - पच् शक् आदि ह्रस्व अकार वाली धातु है। उसका पपक्थ शशक्य आदि रूप बनते हैं।

17.11 ऋतो भारद्वाजस्य॥ (6.2.63)

सूत्रार्थ - भारद्वाज ऋषि का मत है कि तास् में नित्यनिट् केवल ऋदन्त धातु से परे ही थल् को इट् न हो, अन्य धातुओं के थल् को इट् हो जाये।

सूत्र व्याख्या - यह नियम सूत्र हैं। इसमें दो पद हैं। ऋतः (5/1), भारद्वाजस्य (6/1)। अचस्तास्वत् थल्यनिटो नित्यम् सूत्र से तास्वत् अव्ययपद, थलि (7/1), अनिटः (5/1), नित्यम् क्रियाविशेषण अव्ययपद। तासि च क्लृपः सूत्र से तासि (7/1) की अनुवृत्ति है। गमेरिट् परस्मैपदेषु सूत्र से इट्

(1/1) की अनुवृत्ति है। न वृदभ्यश्चतुर्भ्यः सूत्र से न अव्ययपद की अनुवृत्ति है। धातु से थल् का विधान है। अतः धातोः (5/1) का आक्षेप किया जाता है। तासौ इव तास्वत् इति सप्तम्यात् वति प्रत्ययः। पदयोजना होती है - उपदेशे ऋतः धातोः तासि नित्यम् अनिटः तास्वत् थलि इट् न। ऋतः धातोः यहां ऋत् धातु का विशेषण है। अतः तदन्त विधि से ऋदन्त धातु से यह अर्थ प्राप्त होता है। सूत्रार्थ होता है - उपदेश में जो धातु ऋदन्त है, वह तास् में नित्य अनिट् हो जैसे तास में इट् आगम नहीं होता वैसे ही उस धातु से थल् को इट् नहीं करना चाहिए।

समुदित अर्थ - अचस्तास्वत् थल्यनिटो नित्यम् सूत्र से तास् में नित्यानिट अजन्त धातु से परे थल् को इट् का निषेध होता है। इसी सूत्र से ऋदन्त धातु से भी इट् निषेध किया जाता है। इस प्रकार इट् का निषेध सिद्ध होता है। सिद्ध होने पर भी सूत्रारम्भ किया गया। अर्थात् सिद्ध होने पर भी कोई बात दोहराई जाये तो नियम बन जाता है। उससे नियम होता है कि भारद्वाज के मत में यदि तास् में नित्य अनिट् धातु से इट् आगम का निषेध तो वह ऋदन्त से ही होता है अन्य धातुओं से इट् निषेध नहीं होता अर्थात् इट् आगम होता है। भारद्वाज से भिन्न पाणिनी आदि मुनि के मत में अचस्तास्वत् थल्यनिटो नित्यम् एवं उपदेशेऽत्वतः सूत्रों से इट् निषेध किया जाता है। ऋदन्त से ही निषेध किया गया है। परन्तु भारद्वाज के मत में ऋदन्त से निषेध है, अन्य से नहीं। इस प्रकार विकल्प फलित होता है कि अचस्तास्वत् थल्यनिगे नित्यम् एवं उपदेशेऽत्वतः से विकल्प होता है। इस सन्दर्भ में कारिका दी गई है -

अजन्तोऽकारवान् वा यस्तास्यनिट् थलि वेडयम्।
ऋदन्त ईदृङ् नित्यानिट् क्राद्यन्यो लिटि सेड् भवेत्॥

उदाहरण में सूत्रार्थसमन्वय -पूर्वोक्त सूत्रों से क्षि धातु उपदेश में अजन्त है एकाच् उपदेशेऽनुदात्तात् सूत्र से उससे परे थल् को इट् का निषेध प्राप्त, भारद्वाज नियम से विकल्प से इट् आगम। उससे इडागम पक्ष में क्षि इ थ स्थिति में द्वित्व, अभ्यास कार्य चिक्षि इ थ।गुण एवं अयादि होकर चिक्षयिथ रूप सिद्ध होता है। इडागम अभाव पक्ष में द्वित्व, अभ्यास कार्य चि क्षि थ स्थिति में गुण होकर चिक्षेथ रूप सिद्ध होता है।

चिक्षियथुः- क्षि धातु मध्यमपुरुष द्विवचन में थस्, थस् को अथुस् द्वित्व, अभ्यास कार्य चिक्षि अथुस्। उसके बाद इकार को इयङ् एवं सकार को रुत्व विर्सग आदेश होकर चिक्षियथुः रूप सिद्ध होता है।

चिक्षिय- क्षि धातु मध्यमपुरुष बहुवचन में थ, थ को अ, द्वित्व, अभ्यास कार्य चिक्षि अ। उसके बाद इकार को इयङ् आदेश होकर चिक्षिय रूप सिद्ध होता है।

चिक्षाय, चिक्षय - क्षि धातु उत्तमपुरुष एकवचन में मिप्, मिप् को णल् ञ्णति से अजन्त अंग को वृद्धि प्राप्त। तब

17.12 णलुत्तमो वा॥ (7.1.91)

सूत्रार्थ - उत्तम पुरूष को णल् विकल्प से णित् हो।

सूत्र व्याख्या - यह अतिदेश सूत्र है। इस सूत्र से णित्त्व का विधान किया जाता है। इस सूत्र में तीन पाद हैं। णल् उत्तमः वा सूत्रगत पदच्छेद है। णल् (1/1) उत्तमः (1/1), वा अव्ययपद है। गोतो णित् सूत्र में णित् (1/1) पद की अनुवृत्ति है। सूत्रार्थ होता है - उत्तम पूरूष संज्ञक णल् को विकल्प से णित् होता है और पक्ष में णकार नहीं होता है। अतः णित्व भी नहीं होता।

उदाहरण -चिक्षाय, चिक्षय

सूत्रार्थसमन्वय - पूर्वोक्त प्रकार से क्षि धातु से णल् में चिक्षि अ स्थिति में वृद्धि प्राप्त किन्तु इस सूत्र से णित् पक्ष में वृद्धि होकर चिक्षै अ तथा अयादि होकर चिक्षाय रूप सिद्ध होता है। णित् अभव पक्ष में गुण होकर चिक्षे अ तथा अयादि होकर चिक्षय रूप सिद्ध होता है।

चिक्षियिव - क्षि धातु उत्तमपुरुष द्विवचन में वस्, नित्यं ङितः से सकार लोप, क्रादि नियम से इट् क्षि इव स्थिति में द्वित्व, अभ्यास कार्य चिक्षि इव। उसके बाद इकार को इयङ् आदेश होकर चिक्षियिव रूप सिद्ध होता है। इसी प्रकार क्षि धातु उत्तमपुरुष बहुवचन में चिक्षियिम रूप सिद्ध होता है।

लिट्	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	चिक्षाय	चिक्षियतुः	चिक्षियुः
मध्यपुरुषः	चिक्षयिथ, चिक्षेय,	चिक्षियिम	चिक्षियिम
उत्तमपुरुषः	चिक्षाय,चिक्षय,	चिक्षियिव	चिक्षियिम

पाठगत प्रश्न 17.2

1. एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् सूत्र का अर्थ लिखिए।
2. किस लक्षण से धातु से परे आर्धधातुक को इट् नहीं होता है?
3. ऊद्दन्तैयौति .... कारिकास्थ धातु अनुदात्ता अथवा।
4. हलन्त की कितनी धातु अनुदात्त हैं?
5. क्रादिनियम क्या है?
6. उपदेशेऽत्वतः सूत्र का अर्थ लिखिए?

7. भारद्वाज के मत में किस को इट् नहीं होता?

8. णलुत्तमो वा सूत्र से क्या किया जाता है?

9. क्षि धातु का लिट् में मित् के कितने और कौनसे रूप है?

10. चिक्षिय धातु रूप में कौन तिङ् प्रत्यय है?

1. तिप् 2. सिप् 3. थस् 4. थ

20. चिक्षाय, चिक्षय में लकार एवं तिङ् प्रत्यय कौन है?

1. लिट् सिप् 2. लुट् मिप् 3. लिट् मिप् 4. लुङ् थ

पाठ का सार

इस पाठ में लिट् लकार के कुछ मुख्य सूत्रों की समालोचना की गई है। लिट् लकार में गणीय निवारण नहीं होता है। अपना भी कोई विकरण नहीं है। धातु को द्वित्व करना इसका वैशिष्ट्य है। इसी प्रकार धातु के अभ्यास का लोप करना दूसरी विशेषता है। इट् आगम की व्यवस्था थोड़ा कठिन है। पूर्व पाठ में लिट् के रूपों को सिद्ध किया गया था। इस पाठ में तो उन सूत्रों को प्रस्तुत किया गया जिससे इट् का आगम या निषेध होता है। अभ्यास के आदि में यदि अत् हो तो उसको दीर्घ, अत आदेः सूत्र से, तथा अचोञ्णिति से अजन्त अंग को वृद्धि तथा अत उपधायाः से उपधा के अत् को वृद्धि णित् या णित् प्रत्यय परे हो तो।

इकः इसषष्ठ्यन्त पद को लेकर जहां गुण वृद्धि का विधान किया जाता है वह गुण इग्लक्षण गुण कहा जाता है और वृद्धि इग्लक्षण वृद्धि कही जाती है। क्ङिति च सूत्र से कित् गित् ङित प्रत्यय पर रहते इग्लक्षण गुण और वृद्धि का निषेध किया जाता है। अतः पाणिनी मुनि ने कहीं प्रत्ययों के स्वकीय कित्त्व, गित्त्व और ङित्त्व करते है। और कहीं अतिदेश। स्वकीय कित्त्व जैसे क्त प्रत्यय, क्तवतु प्रत्यय, यक् प्रत्यय आदि। असंयोगाल्लिट् किट् सूत्र से असंयोग से परे जो अपित् लिट् है उसको कित्त्व का विधान किया जाता है। कहीं कित्त्व या ङित्त्व के प्राप्ति के लिए जो अपित्त्व है वह हि अतिदेश है जैसे सेर्ह्यपिच्च आडुत्तमस्य पिच्च आदि। लिट् में कित्त्वातिदेश का सूत्र जैसे - सार्वधातुकमपित् यह सूत्र अपित् सार्वधातुक का ङित्त्व विधान करता है। अतः उन उन स्थलों में पाणिनी ने प्रत्यय को पित् या अपित् करता है।

धातु से तिङ् और कृत् दो प्रकार के प्रत्ययों का विधान किया जाता है। यहां दोनों प्रकार के प्रत्ययों में इट् आगम प्रसंग होता है। तिङ् और कृत् प्रत्ययों में आर्धधातुकस्येड् वलादेः सूत्र से वलादि आर्धधातुक को इट् का आगम का विधान किया जाता है। जिस धातु के एकाच् अनुदात्त होने पर उस धातु परे वलादि आर्धधातुक को इट् का आगम नहीं होता है। इस निषेधक का सूत्र है एकाच् उपदेशेऽनुदात्तात्। इस सूत्र से धातु के परे तिङ् एवं कृत् प्रत्ययों में लादि आर्धधातुक को

इट् का आगम नहीं होता है। जिस धातु से परे इट् नहीं होता उस धातु को अनिट् कहा जाता है। जिस धातु परे इट् होता है उसे सेट् कहते हैं। जिस धातु से परे इट् विकल्प से होता है उसे वेट् कहते हैं।

एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् सूत्र से निषेध किया। लिट् लकार में क्रादि आठ धातुओं से यह निषेध प्रवृत्त होता है। अन्य धातुओं से इट् का आगम होता है। लिट् लकार को छोड़कर अन्यत्र उन धातुओं से इट् आगम नहीं होता किन्तु लिट् में होता है।

यहाँ थल् प्रत्यय विशिष्ट है। जिन धातुओं से तास् प्रत्यय का नित्य इट् नहीं होता उनमें ऋदन्तादि धातुओं को थल् से इट् नहीं होता है। अन्य अजन्त या अकारवान् धातु को विकल्प से इट् होता है। अर्थात् अजन्त अथवा अकार धातु यदि तास् प्रत्यय में अनिट् है तो थल् में वेट् होती है। ऋदन्त धातु तो तास् में अनिट् हो तो थल् भी अनिट् होता है। लिट् में थल् को छोड़कर अन्यत्र क्रादि से भिन्न सेट् होती है।

पाठांत प्रश्न

1. अचो ञ्णिति सूत्र की व्याख्या करें।
2. कुहोश्चुः सूत्र की व्याख्या करें।
3. आत, आतुः, चिक्षाय, चिक्षियतुः, चिक्षयिथ, चिक्षेथः को ससूत्र सिद्ध कीजिए।
4. एकाच उपदेशेऽनुदात्तात् का वर्णन कीजिए।
5. भारद्वाजनियम का वर्णन कीजिए।
6. णलुत्तमो वा सूत्र की व्याख्या कीजिए।
7. चिक्षेथ, चिक्षयिथ, चिक्षाय, चिक्षय, चिक्षिय की ससूत्र व्यख्या कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

17.1

1. अत आदेः सूत्र से।
2. अत सातत्यगमनम्।
3. अत उपधायाः।

4. द्वित्वनिमित्तक अच् को मानकर अच् के स्थान पर आदेश नहीं होता द्वित्व करना हो तो।
5. कुहोश्चुः।
6. अचो ञ्णिति।
7. असंयोगाल्लिट् कित् सूत्र से अतुस् की कित् की संज्ञा होने से।
8. अचिश्नुधातुभ्रुवां "वोरियङुवङौ सूत्र से।
9. 2

17.2

1. उपदेश में जो धातु एकाच् अनुदात्त है उससे आर्धधातुक को इट् नहीं होता।
2. उपदेश में जो धातु एकाच् अनुदात्त है उससे आर्धधातुक को इट् नहीं होता।
3. नहीं
4. 103
5. क्रादि से ही लिट् में इट् नहीं होता है अन्य अनिट् से भी इट् आगम होता है यह क्रादिनियम है।
6. उपदेश में अकारवत् तास् में नित्य अनिट् से पर थल को इट् नहीं हो।
7. भारद्वाज के मत में तास् में नित्य अनिट् ऋदन्त से थल् को इट् नहीं होता।
8. णलुत्तमो वा सूत्र से उत्तम णल् को णित्त्व अतिदेश किया जाता है।
9. क्षि धातु के लिट् में मिप् प्रत्यय से चिक्षाय एवं चिक्षय दो रूप बनते हैं।
10. 4
11. 3